उच्च शिक्षा में महिलाओं की स्थिति (उत्तरप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 बृजेन्द्र सिंह गुर्जर*, डॉ0 दर्शी चतुर्वेदी**

**प्राचार्य, अग्रवाल कन्या महाविद्यालय, गंगापुरसिटी, राजास्थान,*

***व्याख्याता, अग्रवाल कन्या महाविद्यालय, गंगापुरसिटी, राजस्थान*

सारांश

उत्तरप्रदेश भारत का एक प्रमुख राज्य है। *पुरातन काल में उत्तर प्रदेश मध्यदेश एवं आर्यवत के नाम से प्रसिद्व था। रामायण तथा महाभारत जैसे पवित्र महाकाव्यों की रचना भी यही हुयी है। प्राचीनकाल से ही यह क्षेत्र संस्कृति एवं ज्ञान का केन्द्र रहा है।*

सूचना और क्रांन्ति के इस दौर में शिक्षा का बहुत महत्व है। महिलायें इस समाज का आधा हिस्सा है। उनकी शिक्षा और बेहतरी से ही समाज शिक्षित और समृद्व हो सकता है। कहते है कि यदि एक पुरुष को शिक्षित किया जाये तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है लेकिन अगर एक महिला को शिक्षित कर दिया जाये तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है, यानी एक महिला के शिक्षित होने से उसके पूरे परिवार की शिक्षा और कल्याण जुडा है। भारत जैसे विकासशील देश में जहां गरीबी और अशिक्षा एक भयंकर समस्या हैं वहॉ स्त्रियों की शिक्षा का महत्व और अधिक बढ जाता है । हमारे सविंधान में स्त्रियों और पुरुषों को समानता का दर्जा दिया गया है । कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ण, लिंग, सम्प्रदाय का हो उसे शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार है । महिलाये जो सदियो से अन्याय शोषण झेल रही थी उनकी स्थिति को सुधारने के लिये भी प्रयास किये गये। शिक्षा मानव की एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योकि यह न केवल व्यक्ति के जीवन में निखार लाती है अपितु उसकी सम्पूर्ण समस्याओं का इलाज इसी में समाहित है। परन्तु प्रदेश की बढती जनसंख्या के कारण इस राज्य की शिक्षा व्यवस्था भी चरमरा गई। यद्यपि उच्च शिक्षा के विकास के लिये वर्तमान समय में प्रदेश में कई सरकारी गैरसरकारी शिक्षण सस्थाये कार्यरत है।

महत्वपूर्ण शब्दः *उच्च शिक्षा, महिलायें, विकास, शैक्षणिक स्तर, उत्तरप्रदेश, परिवार, संविधान, महत्व।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 बृजेन्द्र सिंह गुर्जर, डॉ0 दर्शी चतुर्वेदी, *''उच्च शिक्षा में महिलाओं की स्थिति (उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में)'*

शोध मंथन,

सितम्बर 2017,

पेज सं0 24–29

http://anubooks.com/?page_id=580

Artcile No.5 (SM 443)

उत्तरप्रदेश भारत का एक प्रमुख राज्य हैं। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश का गठन **1 नवम्बर 1956** को हुआ[1] तथा इसका पुर्नगठन **9 नवम्बर 2000** को हुआ।[2] वर्तमान में इसकी जनसंख्या 19,95,81,477 है। जो भारत की **कुल जनसंख्या का 16.16 प्रतिशत** है।[3]

पुरातन काल में उत्तर प्रदेश मध्यदेश एवं आर्यवत के नाम से प्रसिद्व था।[4] रामायण तथा महाभारत जैसे पवित्र महाकाव्यों की रचना भी यही हुयी है।[5] प्राचीनकाल से ही यह क्षेत्र संस्कृति एवं ज्ञान का केन्द्र रहा है।

सूचना और क्रांन्ति के इस दौर में शिक्षा का बहुत महत्व है। महिलायें इस समाज का आधा हिस्सा है। उनकी शिक्षा और बेहतरी से ही समाज शिक्षित और समष्द्व हो सकता है। कहते है कि यदि एक पुरुष को शिक्षित किया जाये तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है लेकिन अगर एक महिला को शिक्षित कर दिया जाये तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है, यानी एक महिला के शिक्षित होने से उसके पूरे परिवार की शिक्षा और कल्याण जुडा है। भारत जैसे विकासशील देश में जहां गरीबी और अशिक्षा एक भयंकर समस्या हैं वहां स्त्रियों की शिक्षा का महत्व और अधिक बढ जाता है । हमारे सविंधान में स्त्रियों और पुरुषों को समानता का दर्जा दिया गया है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ण, लिंग, सम्प्रदाय का हो उसे शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार है । महिलायें जो सदियों से अन्याय शोषण झेल रही थी उनकी स्थिति को सुधारने के लिये भी प्रयास किये गये। पचंवर्षीय योजनायों में शिक्षा को स्त्रियों की स्थिति सुधारने का एक उपकरण माना गया। सन 1948 एवं 1949 में उच्च शिक्षा पर केन्द्रित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन हुआ। यह आयोग डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस आयोग ने यह सुक्षाव दिया कि स्त्री शिक्षा को बढावा दिया जाये। स्त्रियों और पुरुषों की शिक्षा एक जैसी न हो उसमें कुछ समानता हो सकती है। कॉलेजो में लडकियों को समान सुविधाये प्रदान की जायें। स्त्रियों को उनकी अभिरुचियों के अनुसार शिक्षा दी जायें। सन 1964 में भारत सरकार ने शिक्षा आयोग का गठन किया जिसके अध्यक्ष डॉ. डी. एस. कोठारी थे। इसे कोठारी आयोग भी कहा जाता है। इस आयोग ने स्त्री शिक्षा को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना। आयोग का मत था कि स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों से भी अधिक महत्वपूर्ण है। लडकियों को भी कला, मानविकी, विज्ञान और शिल्प विज्ञान के पाठयक्रमों में मुक्तभाव से प्रवेश मिलना चाहिये। उन्हे किसी खास विषय को चुनने के लिये विवश नही किया जाना चाहिये। महिलायो को उच्च शिक्षा के लिये विवश नही किया जाना चाहिये। उन्हें उच्च शिक्षा के लिये हर प्रकार का प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलनी चााहिये। स्त्रियों की शिक्षा के लिये विशेष प्रयास किये जाने चाहिये और उनके लिये जरुरी धन जुटाना चाहिये। सभी स्तरों पर और सभी क्षेत्रों में लडकियों की शिक्षा की और पर्याप्त ध्यान देना की आवश्यकता है। पूर्व स्नातक स्तर पर महिलाओ के लिये पृथक कॉलेज स्थापित किये जा सकतें हैं। साक्षरता को किसी भी समाज में सामाजिक और आर्थिक विकास का प्रतीक माना जाता है। सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक चेतना तथा आर्थिक विकास के लिये उच्च साक्षरता दर और शिक्षा की गुणवत्ता आवश्यक है। 2001 की जनगणना के अनुसार उत्तर

प्रदेश में **साक्षरता दर 57.36 प्रतिशत** थी। जिसमें 70.23 प्रतिशत पुरुष तथा **42.28 प्रतिशत महिलायें** थी। प्रदेश की **ग्रामीण** साक्षरता 52.53 प्रतिशत और नगरीय साक्षरता 69.75 प्रतिशत थी। ग्रामीण साक्षरता में 66.59 प्रतिशत पुरुष साक्षरता व **36.90 प्रतिशत महिला साक्षरता** थी। **नगरीय साक्षरता में 76.76 प्रतिशत पुरुष साक्षरता** व **61.23 प्रतिशत महिला साक्षरता** थी। **2011 की जनगणना** के अनुसार कुल **साक्षरता 69.72 प्रतिषत** है जिसमें **पुरूश 79.24 प्रतिशत और महिलाए 59.26 प्रतिशत** है। प्रदेश की **ग्रामीण साक्षरता कुल 65.46 प्रतिशत। पुरूष साक्षरता 76.33 प्रतिशत और महिला साक्षरता 48.48 प्रतिशत** है। **नगरीय साक्षरता में कुल 75.14 प्रतिशत जिसमें पुरूष साक्षरता 80.45 और महिला साक्षरता 60.96 प्रतिशत** है।[6]

विभिन्न वर्षों में साक्षरता दर

वर्ष	भारत में साक्षरता दर			उत्तर प्रदेश में साक्षरता दर		
	कुल	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला
1951	18.33	27.16	8.86	12.02	19.17	4.07
1961	28.30	40.40	15.35	20.87	32.08	8.36
1971	34.45	45.96	21.97	23.99	35.01	11.23
1981	43.57	56.38	29.76	32.65	46.65	16.74
1991	52.21	64.13	39.29	40.71	54.82	24.37
2001	65.38	75.85	54.16	57.36	70.23	42.98
2011	74.04	82.14	65.46	69.72	79.24	59.26

शिक्षा मानव की एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योकि यह न केवल व्यक्ति के जीवन में निखार लाती है अपितु उसकी सम्पूर्ण समस्याओं का इलाज इसी में समाहित है। परन्तु प्रदेश की बढती जनसंख्या के कारण इस राज्य की शिक्षा व्यवस्था भी चरमरा गई। यद्यपि उच्च शिक्षा के विकास के लिये वर्तमान समय में प्रदेश में कई सरकारी गैरसरकारी शिक्षण सस्थाये कार्यरत है।

1	758	महाविद्यायल
2	26	विश्वविद्यालय
3	95	इंजीनियरिंग कॉलेज
4	116	लॉ कॉलेज
5	9	होम्योपेथी कॉलेज
6	11	आर्युवेदिक कॉलेज
7	29	डेन्टल कॉलेज
8	16	मेडिकल कॉलेज
9	9	नर्सिंग कॉलेज
10	6	आर्किअटेक्चर कॉलेज

11	14	वायाटेक्नोलॉजी कॉलेज
12	15	होटल मेनेजमेन्ट कॉलेज
13	134	मेनेजमेन्ट इन्सटीटियूट कॉलेज
14	100	पोलिटेक्निक कॉलेज
15	9	रिसर्च कॉलेज[7]

उच्च शिक्षा और महिलायें – प्राथमिक शैक्षिक स्तर पर अपेक्षाकृत कम नामांकन तथा विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर स्कूल छोड देने के कारण बहुत कम संख्या में लडकियां उच्च शिक्षा तक पहुॅच पाती है। परन्तु उत्साहजनक तथ्य यह है कि आज उच्च शिक्षा के लगभग सभी क्षेत्रों मे लडकियां शिक्षा प्राप्त कर रही है। कला और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में पहले भी थोडा बहुत लडकियां शिक्षा प्राप्त करती थी। परन्तु साइंस, इंजीनियरिंग व कामर्स आदि में तो उनकी सख्या न के बराबर थी परन्तु अब इन सभी क्षेत्रों में लडकियां अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। उत्तर प्रदेश में सन **1980–81 में उच्च शिक्षा मे महिलाओं का कुल नामांकन 19.0 प्रतिशत हुआ था**[8] **जबकि 2000–2001 मे महिलायों का कुल नामांकन 32.51 प्रतिशत** हुआ। 2011 में उच्च शिक्षा में जिसमें पी. एच.डी., एम फिल और पी. जी में कुल नामांकन 163365 हुआ तथा यू. जी में कुल नामांकन 1780143 हुआ।।[9] इन दोनों वर्शो का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि महिलायों के उच्च शिक्षा में नामांकन में 13 प्रतिशत की वृद्वि हुयी है। इससे यह ज्ञात होता है कि स्त्रियों मे शिक्षा के प्रति झुकाव बढ रहा है। वे धीरे धीरे शिक्षा के प्रति जागरुक हो रही व इसके महत्व को समझ रही है।

उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा में महिलायों का सन 1980.81 व 2000.2001 में कुल नामांकन

वर्ष	कुल नामांकन	कुलमहिला नांमाकन	महिला प्रतिषत
1980.81	445677	84824	19.0 :
2000.2001	1141364	371120	32.51 :

सरकार भी स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दें रही है। महिलाओं को निशुल्क शिक्षा, प्राइवेट शिक्षा देने की सुविधा, छात्रवृत्तियां आदि देकर शिक्षा के विषय में प्रोत्साहित किया जा रहा है। **विश्व बैंक के सहयोग से उत्तर प्रदेश के 10 जिलों में शिक्षा के प्रयास जारी है। महिला शिक्षा को बढाने के लिये 10 करोड डॉलर की राशि गर्ल्स एण्ड वीमैन ऐजुकेशन एसोसियेटिंग फण्ड से प्राप्त हुई है। प्रदेश में स्नातक स्तर तक बालिकाओं के लिये शिक्षा मुफत कर दी गई है।** महिला समांख्या कार्यक्रम भी ग्रामीण क्षेत्रों की महिलायो की शिक्षा उनके सशक्तिकरण एवं आत्मविश्वास मे वृद्वि के लिये चलाया गया।

महिला शिक्षा –समस्यायें और प्रवृत्तियां – विभिन्न सरकारी प्रयासों के कारण आज महिला शिक्षा की दिशा में काफी प्रगति हुई है लेकिन अभी इस **साइबर युग** में भी कई ऐसे सामाजिक,

आर्थिक व सांस्कृतिक कारण है जिनके कारण महिलाऐं शिक्षा प्रणाली मे भाग नही ले पाती है। समाज में लडकों और लडकियों के सन्दर्भ में प्रचलित सास्ंकृतिक मूल्यों तथा घरेलू कार्यो व प्रजनन में भूमिका आदि निम्नलिखित कारणों से महिला शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

1. लडकियों को स्कूल भेजने के प्रति उपेक्षाभाव
2. युवा लडकियों पर घर से निकलने पर बदिंशे
3. कम उम्र में कन्याओं का विवाह
4. लडके और लडकियों मे भेदभाव
5. पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था
6. महिलायों मे शिक्षा के प्रति चेतना की कमी
7. गरीबी
8. सहशिक्षा का अभाव
9. ग्रामीण क्षेत्रों मे स्कूल कॉलेजो का अभाव
10. सुविधायों का अभाव

समय के साथ साथ सरकार तथा विभिन्न ऐजेन्सियों द्वारा चलाये जा रहे चेतना पैदा करने वाले कार्यक्रमों के कारण स्थिति मे काफी सुधार दिखाई दे रहा है। गांव के अनपढ माता पिता भी अब अपनी बेटी को शहर के कॉलेज मे भेजने का सपना देखने लगे हैं। महिला शिक्षा के प्रति लोगों का व्यवहार और दृष्टिकोण बडी तेजी के साथ बदल रहा है। शिक्षा को जीवन की आम समस्यायें को सुलझाने के लिये अत्यन्त आवश्यक मानकर लडकियों को उच्च शिक्षा दी जा रही है। आज लडकियां इंजीनियरिंग, कृषि, वाणिज्य, विधि प्रवंधन और जनसंचार जैसे गैरपरम्परागत क्षेत्रों में भी आगे आ रही है। पहले महिलायें आर्थिक समस्याओं के चलते मजबूरी मे ही घर की चारदीवारी को लांघकर व्यवसायिक क्षेत्र मे सक्रिय होती थी लेकिन अब महिलायें अपने आत्मसम्मान और सुनहरे भविष्य के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त करती है और फिर विभिन्न व्यवसायिक गतिविधियों मे सक्रिय हो जाती है। आज महिलायें उच्च व व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर समाज मे अपनी स्वतन्त्र पहचान बना रही है। कामकाजी महिलायों के प्रति पुरुषों के रुख मे भी अब सकारात्मक बदलाव आया है। कामकाजी महिलायो की दिक्कतों को समझकर परिवार की और से उन्हें पूरा सहयोग दिया जाता है। उनकी घरेलू जिम्मेदारियो को सीमित किया जा रहा है। इस कारण महिलायो की समाज में स्वतन्त्र गतिशीलता को मान्यता मिल रही है और उन पर से अनावश्यक सामाजिक बन्धनो की जकड ढीली हो रही है।[10]

आजादी के बाद लोकतन्त्र से समान अधिकारो और अवसरो की गारंटी मिलने पर महिलाये व्यापक राष्ट्रीय चेतना से जुढी और उन्होने यथासम्भव बहुमुखी विकास के मार्ग पर कदम भी बढाया और वे समाज में प्रतिश्ठित हुयी। आज की महिलाये केवल पत्नी, माता आदि सम्बन्धों के द्वारा ही अपना परिचय नही देती, बल्कि अपने आपको राष्ट्र या समाज के उत्तरदायी

नागरिक के रुप में उपस्थित करती है। आज 21वीं शताब्दी मे प्रवेश करती हुयी लाखों शिक्षित महिलाये राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे कार्यरत है। वह प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री विधायक, न्यायाधीश, आई.सी.एस., पी.सी.एस. आदि बनकर राष्ट्र संचालन कर रही है। खेलकूद, पर्वतारोहण, इंजीनियरिंग के क्षेत्र शिक्षित महिलायों से गौरवान्वित है।

सन्दर्भ सूची

1-Berendra Grover,Ranjna Grover,Encyclopedia of india and her state,Deep and deep publication,New Delhi,1998,p. 397

2-Derek O'Brien,The Penguin India ReferenceYearbook.2005,penguin book India Delhi,P.595

3-http://uponline.in/profile/history/ Accessed on -09.08.08

4-Dr.S.R.Sharma, History and Development of Higher Education in Free India, vol.2-A.B.D. publishing, Jaipur, 2005, p.182

5.स्वप्निल सारस्वत ,महिला विकास एक परिदृश्य, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005,पृ0.29.3

6-http://www.nlm.nic.in/literacy01-nlm.htm Accessed on - 12.08.08

7-http://upeducation.net/ Accessed on - 12.08.08

8-Dr.S.R.Sharma,History and Development of Higher Education in Free India,vol.2-A.B.D. publishing, Jaipur,2005,p.182

9-Dr.S.R.Sharma, History and Development of Higher Education in Free India Vol-3 p.183-184

10 स्वप्निल सारस्वत ,महिला विकास एक परिदृश्य, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ.29.33

11-www.census2011.co.in.census/state/uttar+pradesh.html.

12-mhrd.gov.in/sites/uplod_files/mhrd/file/statistics/AISHE2011-12P-1-pdf

13- www.census2011.co.in/literacy.php